ISC EXAMINATION-2023
HINDI
Solved Paper
Class-12th

Maximum Marks: 80
Time allowed: Three hours
*Candidates are **allowed additional 15 minutes** for **only** reading the paper.*
*They must **NOT** start writing during this time.*

*Answer questions 1, 2 and 3 in Section A and four other questions from Section B on **any three** out of the four prescribed textbooks.*
The intended marks for questions or parts of questions are given in brackets [].

SECTION - A

LANGUAGE - 40 MARKS

Question-1.

Write a composition in approximately 400 words in Hindi on any one of the topics given below.
किसी एक विषय पर हिंदी में निबन्ध लिखिए जो लगभग 400 शब्दों से कम न हो: **[15]**

(i) आपके पिता ने सपरिवार देशाटन की योजना बनाई और आप सब पूरी तैयारी के साथ यात्रा पर निकल पड़े। देश के अद्भुत प्राकृतिक सौन्दर्य ने आपको मंत्रमुग्ध कर दिया। उस यात्रा के दौरान जो आनन्द की अनुभूति आपने की, उसका वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

(ii) सर्वदा सकारात्मक सोच रखने वाले मनुष्य के जीवन से सभी मुश्किलें बड़ी आसानी से दूर हो जाती हैं और यदि सोच नकारात्मक हो, तो जीवन में दु:ख के सिवा कुछ प्राप्त नहीं होता। इस विषय के सम्बन्ध में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

(iii) बचपन से लेकर किशोरावस्था तक आपकी विचारधारा में बहुत परिवर्तन आया है। आप पहले से अधिक समझदार और परिपक्व हुए हैं। बचपन की कुछ ऐसी घटनाओं का वर्णन कीजिए जिसे याद कर आपको आज भी हँसी आ जाती है और अब लगता है कि आप बड़े हो गए हैं।

(iv) 'गाँवों में रहकर जीवन बिताना, शहरी जीवन की तुलना में, अधिक आनन्ददायक तथा आसान होता है।'- इस विषय के पक्ष या विपक्ष में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

(v) किसी गलतफहमी के कारण कई वर्षों तक आपकी अपने एक अच्छे मित्र से बातचीत नहीं हुई। अब आप दोनों की बातचीत फिर से शुरू हो गई है। आपकी मित्रता में यह गलतफहमी क्यों उत्पन्न हुई तथा अब सब कुछ सामान्य हो जाने पर आप कैसा महसूस करते हैं? समझाकर लिखिए।

(vi) निम्नलिखित में से किसी **एक** विषय पर मौलिक कहानी लिखिए:

(a) 'परिश्रमी मनुष्य कभी ईश्वर की कृपा से वंचित नहीं रह सकता।'

(b) निम्नलिखित वाक्य से अन्त करते हुए एक कहानी लिखिए।

..... और उनका वह एहसान मैं जीवन भर न भुला सका/सकी।

Question-2.

Read the passage given below carefully and answer the questions that follow, using your own words in Hindi.
नीचे दिए गए गद्यांश को ध्यान से पढ़िए और अपने शब्दों का प्रयोग करते हुए निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में दीजिए:

कुछ समय पहले की बात है। मेट्रो रेल में सफर करते समय एक अलग अनुभव हुआ। एक छोटी-सी बच्ची ने अपनी चुलबुली हरकतों से रेल के उस पूरे डिब्बे को खुशनुमा कर रखा था। कभी वह अपने परिवार के लोगों के कहने पर तोतली जुबान में कोई फ़िल्मी गीत सुनाती, तो कभी किसी गीत के बोल पर ठुमके लगाती। उस डिब्बे में मौजूद लोगों के बीच जहाँ तक उसकी जीवंतता की लहरें पहुँच

रही थीं, वहाँ तक हर चेहरे पर मुस्कान सज गई थी। निश्चित रूप से उसकी बाल-सुलभ चपलता और हाज़िरजवाबी का आनन्द उठाते सभी चेहरे किसी-न-किसी गंतव्य तक पहुँचने के लिए ही वहाँ थे या गंतव्य से वापस लौट रहे थे। उनमें नौकरीपेशा वर्ग, विद्यार्थी, गृहणियाँ और उन तमाम वर्गों के लोग शामिल थे, जो अपनी यात्रा के लिए मेट्रो का सफर सुविधानजनक समझते हैं। ज़ाहिर है, सभी के मन-मस्तिष्क में कुछ-न-कुछ चल रहा होगा! यानि समय पर कहीं पहुँचने की फिक्र, पहुँचने के बाद किसी से मिलने या काम करने की फिक्र, ऑफिस या घर के किसी काम की फिक्र आदि। लेकिन उस बच्ची की प्यारी हरकतों ने कुछ समय के लिए उन सब गंभीर विचारों को मस्तिष्क से निकाल कर आसपास खड़े लोगों के बीच जगह बना ली थी। उसने कुछ क्षणों के लिए हम सबके अन्दर सोए हुए बच्चे को जगा दिया था।

इन सबके बीच केवल एक महोदय का चेहरा था, जो उदास था। ऐसा लग रहा था कि कठोरता की परछाई उन्हें छोड़ कर जाने को बिल्कुल तैयार नहीं थी। मुझे थोड़ा आश्चर्य भी हुआ उनकी उदासीनता पर। शायद कोई परेशानी रही हो, जो उन्हें इस मुस्कान से दूर रखे हुए थी या फिर हो सकता है कि उनका स्वभाव ही ऐसा हो।

एक छोटा बच्चा बहुत कोमल होता है, तन और मन दोनों से वह इतना संवेदनशील होता है कि न्यूनतम प्रेम, भय और दुत्कार को भी भली-भाँति समझता और अनुभव करता है। उसके प्रति अपनी प्रतिक्रिया देता है। लेकिन ज्यों-ज्यों हमारी उम्र बढ़ती जाती है, यह संवेदनशीलता हम सबमें कम होती जाती है। कारण कई हो सकते हैं- पारिवारिक, सामाजिक, मानसिक या आर्थिक। बहुत हद तक हमारा कामकाज का क्षेत्र या व्यवसाय भी इसके लिए उत्तरदायी होता है। उदाहरण के तौर पर जहाँ मनोरंजन और कला के क्षेत्र से जुड़े लोग अपनी संवेदनशीलता को बचाए रख पाने में सक्षम होते हैं, वहीं आज की कठोर दुनिया की कड़वी सच्चाइयों को बटोरते हुए और दिन-रात उसी में माथा खपाते हुए लोग धीरे-धीरे संवेनशीलता से दूर होते चले जाते हैं। अब प्रश्न यह उठता है कि हम प्रकृति प्रदत्त इस मानवीय गुण को किस प्रकार सींचें, जिससे यह वक्त और समाज के बेरहम थपेड़ों से कुम्हलाने की बजाय हमेशा हरा-भरा रहे! इसके लिए हमें ज़रूरत है संवेदनाओं के सम्पर्क में रहने, भावनात्मक साहित्य पढ़ने, ऐसी फिल्में देखने, ऐसे मित्रों के साथ समय बिताने की, जिनके अन्दर बचपन और भावनाएँ अभी तक जीवित हैं। ऐसा संगीत सुनने की ज़रूरत है, जो हमें याद दिलाए कि हमारे अन्दर भी एक हृदय धड़कता है। वे सब अनुभव, जो कभी हमाारे अधरों पर मुस्कान, तो कभी हमारी आँखों में नमी के बादल ला दें, का जिन्दा रहना बहुत जरूरी है।

प्रश्न:

(i) लेखक किसमें सफ़र कर रहे थे? सफ़र के दौरान क्या देखकर उन्हें खुशी हुई? समझाकर लिखिए। **[3]**

(ii) लेखक को किसे देखकर आश्चर्य हुआ और क्यों? उन्हें देखकर लेखक ने क्या सोचा? **[3]**

(iii) उम्र बढ़ने के साथ संवेदनशीलता कम होने के क्या कारण हैं? समझाकर लिखिए। **[3]**

(iv) "आज की कठोर दुनिया की कड़वी सच्चाइयों को बटोरते हुए और दिन-रात उसी में माथा खपाते हुए लोग धीरे-धीरे संवेदनशीलता से दूर होते चले जाते हैं।"

(a) 'संवेदनशीलता' शब्द का सही अर्थ है **[1]**

(1) भावुकता **(2)** मूर्खता

(3) उदारता **(4)** असहजता

(b) लोग किसमें दिन-रात माथा खपा रहे है? **[1]**

(1) पैसे गँवाने में। **(2)** बदनाम करने में।

(3) कड़वी सच्चाइयों को बटोरने में। **(4)** खुशियों को लुटाने में।

(c) 'माथा खपाना' का अभिप्राय क्या है? **[1]**

(1) माथा पीटना। **(2)** सिर धुनना।

(3) माथापच्ची करना। **(4)** खिच-खिच करना।

(v) "वे सब अनुभव, जो कभी हमारे अधरों पर मुस्कान, तो कभी हमारी आँखों में नमी के बादल ला दें, का जिन्दा रहना बहुत जरूरी है।"

(a) हमारे अधरों पर मुस्कान किससे आती है? **[1]**

(1) उदासीनता से। **(2)** असंवेदनशीलता से।

(3) भावनात्मक साहित्य पढ़ने से। **(4)** वैमनस्यता से।

(b) 'आँखों में नमी के बादल' से लेखक का क्या अभिप्राय है? **[1]**

(1) दु:ख में आँसू आना। **(2)** गुस्से में आँसू आना।

(3) भावुकता में आँसू आना। **(4)** बिछुड़ने पर आँसू आना।

(c) इस गद्यांश का उचित शीर्षक क्या हो सकता है? **[1]**

(1) संवेदनशीलता **(2)** सरलता

(3) प्रौढ़ता **(4)** सम्पन्नता

Question-3.

(A) Do as directed:

निर्देशानुसार उत्तर दीजिए:

(i) निम्नलिखित वाक्य का शुद्ध रूप लिखिए। **[1]**

आज़ादी के अमृत महोत्सव में अनेकों राज्यों ने भाग लिया।

(ii) रिक्त स्थान में सही शब्द भरिए। **[1]**

अब तुम जले पर ..... मत छिड़को।

(iii) निम्नलिखित वाक्यों में से शुद्ध वाक्य का चयन कीजिए। **[1]**

(a) यह तो वही बात हुई 'जैसा करोगे वैसा भरोगे'।

(b) यह तो वही बात हुई 'जितना करोगे उतना भरोगे'।

(c) यह तो वही बात हुई 'जैसा भरोगे वैसा करोगे'।

(d) यह तो वही बात हुई 'जो करोगे सो भरोगे'।

(iv) निम्नलिखित वाक्यों में से अशुद्ध वाक्य का चयन कीजिए। **[1]**

(a) महाराणा प्रताप युद्ध के मैदान में वीरगति को प्राप्त हुए।

(b) झाँसी की रानी एक वीरांगना थीं।

(c) अक्सर लोग राजगद्दी पाने के लिए अपने प्रियजनों की मृत्यु कर देते हैं।

(d) अर्जुन सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर थे।

(v) निम्नलिखित वाक्य में रेखांकित शब्द के लिए सही शब्द का चयन कीजिए। **[1]**

मैं **उपेक्षा** करता हूँ कि तुम यह कार्य पूर्ण कर लोगे।

(a) संदेह **(b)** विश्वास

(c) अपेक्षा **(d)** वादा

(B) Do as directed:

निर्देशानुसार उत्तर दीजिए:

(i) निम्नलिखित मुहावरे से वाक्य बनाइए। **[1]**

बाग-बाग होना।

(ii) निम्नलिखित मुहावरे को शुद्ध कीजिए। **[1]**

दिन दूनी रात तिगुनी तरक्की करना।

(iii) निम्नलिखित वाक्य में रिक्त स्थान की पूर्ति के लिए एक सटीक मुहावरे का चयन कीजिए। **[1]**

कई बार अपना काम सीधे तरीके से नहीं हो पाता तब ..... पड़ता है।

(a) टूट पडना **(b)** टेढ़ी उँगली से घी निकालना

(c) टोपी उछालना **(d)** जड़ खोदना

(iv) निम्नलिखित वाक्य के लिए एक सटीक मुहावरे का चयन कीजिए। **[1]**

'बिना सोचे-समझे किसी कार्य को करने वाले अन्त में पछताते हैं।'

(a) हाथ मलना। **(b)** हाथ साफ करना।

(c) हाथ डालना। **(d)** हाथ खाली होना।

(v) निम्नलिखित मुहावरे के सही अर्थ का चयन कीजिए। **[1]**

राई का पहाड़ बनाना।

(a) छोटे व्यक्ति का उन्नति करना।
(b) छोटी-सी बात को बेवज़ह बढ़ाना।
(c) छोटे-छोटे प्रयासों से सफलता पाना।
(d) छोटा-सा रहस्य प्रकट होना।

SECTION - B

LITERATURE- 40 MARKS

Answer four questions from this Section on any three of the prescribed textbooks.

पाठ्यक्रम में निर्धारित चार पुस्तकों में से किन्हीं तीन पुस्तकों के चार प्रश्नों के उत्तर इस भाग से दीजिए।

गद्य संकलन (Gadya Sankalan)

Question 4.

"सच! मेरी बड़ी चिंता दूर हुई। इस बार भगवान् ने मेरी सुन ली। ज़रूर परसाद चढ़ाऊँगी रे!"

(i) उक्त पंक्तियों से सम्बन्धित पाठ तथा लेखक का नाम लिखिए **[1]**

(ii) अम्मा इस समय किस से बात कर रही हैं तथा वे परसाद क्यों चढ़ाना चाहती हैं? **[2]**

(iii) 'इस बार भगवान ने मेरी सुन ली'- इस बार ऐसा क्या हुआ था जो पिछली बार नही हो पाया था? **[2]**

(iv) 'आर्थिक तथा सामाजिक मज़बूरियों के कारण दो पीढ़ियों को अलगाव का दर्द सहना पड़ता है।' इस कथन की पुष्टि इस कहानी के आधार पर कीजिए। **[5]**

Question 5.

"पुत्र-प्रेम' कहानी में लेखक ने चैतन्यदास के माध्यम से एक ऐसे पिता का चित्रण किया है, जिन्होंने अपने पुत्र-प्रेम की तुलना में अर्थ-प्रेम को अधिक महत्त्व दिया। क्या आप इस कथन से सहमत हैं? कहानी के आधार पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

[10]

Question 6.

'दासी' कहानी का शीर्षक उपयुक्त तथा सार्थक है- इस कथन के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त कीजिए। क्या इस कहानी का कोई और शीर्षक हो सकता था? तर्क सहित स्पष्ट कीजिए। **[10]**

काव्य मंजरी (Kavya Manjari)

Question 7.

"जाऊँ कहाँ तजि चरन तुम्हारे।
काको नाम पति पावन जग केहि अति दीन पियारे।
कौने देव बराइ बिरद हित, हठि-हठि अधम उधारे।
खग, मृग, व्याध, पषान, विटप जड़, जवन-कवन सुर तारे।
देव, दनुज, मुनि, नाग, मनुज सब, माया-बिबस बिचारे।
तिनके हाथ दास तुलसी प्रभु, कहा अपुनपौ हारे।।"

(i) कवि ने उक्त पंक्तियों में 'पतित पावन' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया है? उन्हें कौन अत्यंत प्रिय है? **[1]**

(ii) 'पषान' और 'मृग' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया गया है, समझाकर लिखिए। **[2]**

(iii) 'तिनके हाथ दास तुलसी प्रभु, कहा अपुनपौ हारे' पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए। **[2]**

(iv) तुलसीदास जी का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी भक्ति-भावना पर प्रकाश डालिए। **[5]**

Question 8.

"आ: धरती कितना देती है" में कवि ने बचपन में और वर्षों बाद बड़े होकर क्या बोया था? दोनों परिस्थितियों में क्या परिणाम हुआ? इसके माध्यम से कवि ने क्या संदेश देना चाहा है? समझाकर लिखिए। **[10]**

Question 9.

''कवि हरिवंशराय बच्चन जी ने 'अंधेरे का दीपक' कविता में मनुष्य को आशावादी बने रहने की प्रेरणा दी है।'' इस कथन को स्पष्ट करते हुए जीवन मे आशावादिता के महत्त्व पर अपने विचार लिखिए। **[10]**

सारा आकाश
(Saara Akash)

Question 10.

" क्या दिन-रात की चख-चख होती रहती है? दिन निकला और शुरू हो गया। कोई और काम नहीं है क्या? नौ बज रहे हैं।"

(i) उक्त कथन के वक्ता और श्रोता कौन हैं? **[1]**

(ii) वक्ता के उक्त कथन पर परिवार के सदस्यों की क्या प्रतिक्रिया थी? वक्ता की माँ ने उसके इस कथन पर क्या कहा? **[2]**

(iii) 'दिन-रात की चख-चख' किसके कारण हो रही थी? उसकी कोई दो विशेषताएँ लिखिए **[2]**

(iv) 'संयुक्त परिवार में रहकर कोई अपने व्यक्तित्व का विकास नहीं कर पाता है।' क्या आप इस कथन से सहमत हैं? उपन्यास के आधार पर लिखिए। **[5]**

Question 11.

"प्रभा के प्रति मेरे मन में प्यार, उसकी मज़बूरियों और तकलीफ़ों के प्रति दया है, या सिर्फ़ अपने किए पर पछतावा है?" इस कथन के पीछे समर की क्या मानसिकता है ? अपनी पत्नी प्रभा के साथ उसके रिश्तों में आए बदलाव का वर्णन कीजिए। **[10]**

Question 12.

'सारा आकाश' उपन्यास ने समाज की उन नारियों का प्रतिनिधित्व किया है जो पारिवारिक कलह को सहन कर परिवार में सुख-सम्पन्नता लाना चाहती हैं? इस कथन के आलोक में प्रभा का चरित्र चित्रण कीजिए। **[10]**

'अषाढ़ का एक दिन'
(Aashad Ka Ek Din)

Question -13.

" ..... तुम चाहते हो इस समय मैं यहाँ से चला जाऊँ। मैं चला जाता हूँ। इसलिए नहीं कि तुम आदेश देते हो। परन्तु इसलिए कि तुम आज अतिथि हो, और अतिथि की इच्छा का मान होना चाहिए।"

(i) उक्त कथन के वक्ता और श्रोता कौन हैं? **[1]**

(ii) उक्त कथन का संदर्भ स्पष्ट कीजिए। **[2]**

(iii) "अतिथि की इच्छा का मान होना चाहिए।" यह कथन वक्ता ने श्रोता से क्यों कहा? **[2]**

(iv) 'वक्ता दूरदर्शी और वाचाल है।' नाटक के आधार पर उदाहरण देते हए स्पष्ट कीजिए। **[5]**

Question 14.

"अन्य लोगों को उससे क्या प्रयोजन है! परन्तु मुझे है। उसके प्रभाव से मेरा घर नष्ट हो रहा है।" अम्बिका की इस नाटक में भूमिका समझाते हुए उक्त कथन के आधार पर उसका चरित्र-चित्रण कीजिए। **[10]**

Question 15.

'आषाढ का एक दिन' नाटक के माध्यम से नाटककार ने आधुनिक युग की समस्याओं को उजागर करने का सफ़ल प्रयास किया है। इस कथन की विवेचना कीजिए। **[10]**

■■

ANSWERS

SECTION - A

1. (i) यात्रा किसी व्यक्ति के जीवन का महत्त्वपूर्ण हिस्सा होता है। यह हमारे जीवन को आनन्द से भरपूर कर देता है। यदि कोई व्यक्ति यात्रा करता है तो उसे मानसिक अनुभूति होती है अर्थात् उसका दिमाग़ शान्त रहता है। मेरे स्कूल की छुट्टी पड़ते ही मैंने पिता जी से कहा कि हमें मसूरी घूमने जाना है तो पिता जी आसानी से बात मान गए। माँ और भाई दोनों ने अपना-अपना घूमने के लिए बैग तैयार करके पहले से रख लिया। यह एक रोमांचकारी यात्रा थी। हमारी यात्रा ट्रेन से शुरू हुई जिसने हमें सीधे देहरादून स्टेशन पर उतारा। वहाँ से हमने होटल के लिए ऑटो किया। उस समय करीब रात के 12 बज रहे थे, इसलिए हम सीधे होटल ही चले गए। ट्रेन के सफ़र ने हमें थका दिया था तो कुछ खाने के बाद हम लोग सो गए। सुबह होते ही हमने मसूरी के लिए कैब बुक की। रास्ते में मैंने देखा बहुत बड़े-बड़े पहाड़ थे और नीचे एक तरफ़ खाई थी। हम पहाड़ों के बीच जा पहुँचे, वहाँ हमारा दूसरा होटल था। हमने कमरे में अपने बैग रखे, तभी पिता जी ने बोला कि आप लोग कुछ खा लो फिर क्रैम्प्टी चलेंगे घूमने के लिए। पिता जी ने फिर खाना ऑर्डर कर दिया क्योंकि हम लोग सुबह के भूखे थे। कुछ समय बाद हमने सोचा कि फिर से कैब बुक की जाए लेकिन क्रैम्प्टी फॉल के रास्ते में तो बहुत जाम लगता है, इसलिए हमने पैदल जाने का निश्चय किया। हम चारों बात करते-करते क्रैम्प्टी की तरफ चलने लगे। क्रैम्प्टी बहुत नीचे था, इसलिए हमें ऊपर से साफ़ दिखाई दे रहा था। रास्ते में प्राकृतिक दृश्य ने तो मेरा मन मोह लिया। यह अद्‌भुत ही नज़ारा था जो पहली बार मैंने अपनी ज़िन्दगी में देखा। क्रैम्प्टी फॉल्स रोड एक खड़ी और घुमावदार सड़क है जिससे हम बहुत आसानी से गुज़र रहे थे। यह बेहद ख़ूबसूरत जगह है। मैंने देखा कि यहाँ पानी एक चट्टान के ठीक ऊपर एक बड़े रॉक पूल में गिरता है। नीचे कई बड़े बोल्डर हैं जिनमें हम तैर सकते हैं। जलप्रपात के ऊपर से समतल क्षेत्र तक एक बड़ी-सी सीढ़ी है, जो काफ़ी मज़ेदार है। क्रैम्प्टी फॉल्स तक पहुँचने से पहले हमें रास्ते में भद्रराज मंदिर, हिमालय की चोटियाँ, शिवालिक पर्वतमाला और फूलों की घाटी के दृश्य भी देखने को मिले। क्रैम्प्टी का नाम दो शब्दों के योग से बना है कैंप और टी। ब्रिटिश अधिकारी अक्सर यहाँ झरने पर चाय पार्टी करते थे, इसलिए इसका नाम क्रैम्प्टी पड़ा। क्रैम्प्टी के आस-पास बहुत-सी दुकानें हैं जहाँ हर तरह की वस्तुएँ कम दामों पर उपलब्ध है, तो हमने वहाँ पर हाथ से बना हुआ बैग लिया। क्रैम्प्टी का जल अत्यन्त ही शीतल था। वहाँ गर्मी में भी ठण्ड का अनुभव होने लगा। फिर रात होते ही हम होटल चले आए क्योंकि अगली सुबह हमारी आगरा के लिए ट्रेन थी। यह मेरे जीवन की सबसे शानदार छुट्टी थी जिसको मैं कभी नहीं भूल सकती।

(ii) नकारात्मक सोच अत्यन्त घातक होती है जो एक बीमारी को जन्म देती है। यह बीमारी शारीरिक न होकर मानसिक होती है। यह नकारात्मक सोच ही किसी व्यक्ति को राजा से रंक बना देती है। रावण को ही देख लीजिए। वह अत्यन्त महान् राजा था लेकिन एक नकारात्मक सोच ने उसकी पूरी लंका को तबाह कर दिया। यदि वह सीता जी का हरण नहीं करता तो राम और रावण के मध्य युद्ध नहीं होता, न ही रावण अन्त में मारा जाता। इसलिए जीवन में सकारात्मक सोच का होना अत्यन्त आवश्यक है। मेरी दो सहेलियाँ हैं, एक तो सीता दूसरी गीता। सीता हमेशा नकारात्मक सोच रखती है इसलिए उसके जीवन में कुछ अच्छा नहीं होता है। वह साधु-सन्तों की बातों पर ज़्यादा विश्वास करती है, इसलिए मेहनत करने से बचती है। सीता और गीता दोनों ही पढ़ने में होशियार थीं, इसलिए उनके माता-पिता ने कहा कि वे आई.ए.एस की तैयारी करें। सीता सोचती थी उसे सब आता है और पण्डित जी ने भी कहा कि वह एक दिन आई.ए.एस. बनेगी तो उसकी पढ़ाई में रुचि कम हो गई, लेकिन गीता निरन्तर अपनी तैयारी में जुटी हुई थी। परीक्षा नज़दीक थी तो मैंने सीता से कहा कि वह भी अच्छे से तैयारी करें और परीक्षा में सफ़ल हो लेकिन उसने मेरी बात अनसुनी-सी कर दी। परीक्षा का समय आ ही गया। दोनों ने ही परीक्षा दी। सीता जब परीक्षा देकर आई तब मैंने उससे पूछा कि उसकी परीक्षा कैसी हुई है, उसने कहा कि बहत अच्छी हुई है और वह इस परीक्षा को उत्तीर्ण कर ही लेगी क्योंकि वह परीक्षा देने से पूर्व एक बाबा से पूछ कर गई थी। गीता थोड़ा निराश थी क्योंकि कुछ प्रश्नों के उत्तर उसे आते नहीं थे। कुछ समय पश्चात् रिजल्ट जारी हुआ। मैंने देखा कि गीता ने परीक्षा उत्तीर्ण कर ली लेकिन सीता ने नहीं। सीता अत्यन्त निराश हुई और अपने भाग्य और बाबा को कोसने लगी। यदि वह भी पढ़ाई कर लेती तो परीक्षा उत्तीर्ण कर लेती। लेकिन गीता हमेशा सकारात्मक सोचती थी इसलिए वह सफ़ल हो गई। कठिनाइयाँ व असफ़लता भी जीवन के भाग हैं इसलिए सकारात्मक सोच के साथ अच्छी एवं बुरी दोनों परिस्थितियों का सामना करना चाहिए तभी सफ़ल हो सकते हैं।

(iii) बचपन हर किसी के जीवन का महत्त्वपूर्ण हिस्सा होता है, जिसे भुलाए भी भुलाया नहीं जा सकता। अक्सर हम अपने बचपन को याद करते रहते हैं क्योंकि उस समय नादान परिन्दे थे, जहाँ मन करता वहाँ उड़ जाते थे लेकिन आज ज़िम्मेदारियों के बोझ तले दबे हुए हैं। बचपन से लेकर किशोरावस्था तक हमारी विचारधारा में बहुतसे परिवर्तन आए हैं। हम पहले से अधिक समझदार और परिपक्व हो गए हैं। मुझे आज भी याद है कि माँ मुझे स्कूल पढ़ने के लिए खींच कर ले जाती थीं और मैं सड़क पर हाथ-पैर फैंकती और रोती थी कि मुझे स्कूल नहीं जाना। आज यह सब याद करके बहुत हँसी आती है। यदि माँ मुझे स्कूल न भेजती तो

मैं एक अच्छी प्रोफेसर नहीं बन पाती। उस समय हम सभी में समझ नहीं होती कि हम क्या कर रहे हैं? और क्यों कर रहे हैं? जो भी चीज़ हमें अच्छी नहीं लगती हम वह नहीं करते थे। बचपन की एक बात और मुझे याद आती है कि कोई भी रिश्तेदार घर में आता था तो मैं उससे बिना किसी के कहे पैसे माँग लेती थी। यह सब सोच कर बहत हँसी आती है कि हम कितने सामान्य थे? बड़ी सरलता से अपने भावों को दूसरे के समक्ष प्रकट कर देते थे। अब लगता है कि बड़े हो गए हैं, यह करना बहुत ही अजीब है क्योंकि हम परिपक्व हो गए हैं।

(iv) गाँव में रहकर जीवन बिताना, शहरी जीवन की तुलना में अधिक आनन्ददायक तथा आसान होता है। मैं इस कथन के पक्ष में हूँ क्योंकि सभी के पूर्वज गाँव से ही सम्बन्धित होते हैं। हमारी 70% जनसंख्या कृषि पर ही निर्भर है। गाँव में शहरी जीवन की तरह कोई दिखावटीपन नहीं है। गाँव का जीवन शहरी जीवन से अलग और आनंददायी होता है। यहाँ पर लोगों के बीच अपनापन और सामाजिक घनिष्ठता दिखाई देती है और हम प्रकृति के ज़्यादा नज़दीक रहते हैं जिस कारण हम प्रकृति प्रेमी भी हो जाते हैं। यहाँ खुली धूप और हवा का आनन्द उठाया जा सकता है। चारों तरफ़ हरियाली और शान्ति कायम होती है। हम यहाँ कृषि करना सीखते हैं। हम सब्जियाँ और अनाज उगाते हैं जिससे हम एक-एक खाने के दाने के महत्त्व को समझते हैं लेकिन शहरों में ऐसा नहीं होता। शहरों मे शादियों में प्लेट में अनेक खाने को बर्बाद किया जाता है क्योंकि वहाँ केवल दिखावटीपन है। खेतों में पशु के लिए चरी भी उगाई जाती है। गाँव में तालाब और नहरें होती हैं। इनमें संग्रहित जल से किसान फ़सलों की सिंचाई करते हैं। गाँव में हमें शुद्ध दूध प्राप्त होता है जबकि शहरों में हम पैकेट वाले दूध पर निर्भर रहते हैं। गाँव का वातावरण अत्यन्त स्वच्छ होता है इसलिए हम प्रदूषण से भी दूर रहते हैं। भारत के गाँव में भी अब शहरों जैसी कुछ सुविधाएँ उपलब्ध हैं; जैसे बिजली, टेलीफ़ोन, सड़क, शौचालय इत्यादि, इसलिए गाँव में जीवन बिताना अत्यन्त आनन्ददायक है।

(v) मैं और रीमा बहुत अच्छी सहेली थीं लेकिन एक गलतफहमी के कारण कई वर्षों तक हमारी बातचीत नहीं हुई। अब पिंकी की वजह से हम दोनों की बातचीत फिर से शुरू हो गई है। व्यक्ति जन्म के बाद से अपनों के मध्य रहता है लेकिन कुछ बातें केवल अपने मित्रों के साथ ही साझा करता है। व्यक्ति का सच्चा मित्र ही उसके प्रत्येक राज को जानता है। एक सच्चा मित्र उस पुस्तकालय के समान है जो समय-समय पर जीवन की कठिनाइयों से लड़ने में मदद करता है। एक दिन रीमा को मेरे बारे में किसी ने गलत-गलत बोल दिया कि मैं रीमा की पीठे पीछे बुराइयाँ करती हूँ जिसके कारण रीमा ने कई वर्षों तक मुझसे बात नहीं की और अमेरिका चली गई लेकिन कुछ दिन पहले वह पिंकी की शादी में भारत आई तब वह मुझे वहाँ आखिरकार मिल ही गई। मैंने उससे बात करने की कोशिश की लेकिन तब भी उसने मुझसे बात तक नही की लेकिन सोहन ने ज़िद की तो उसने बात करना शुरू किया तब उसने मुझे बताया कि मैंने रिंकी से उसके चरित्र के बारे में ग़लत बातें बोली हैं तब मैंने समझाया कि मैंने कभी उसके बारे में कुछ ऐसा नहीं बोला रिंकी हमें अलग करना चाहती थी इसलिए उसने ऐसा किया। उस समय रिंकी भी मौजूद थी। उसे अपने किए पर पछतावा था फिर उसने सच्चाई बताई तो रीमा को मुझ पर भरोसा हो गया। हमने पिंकी की शादी में बहुत मस्ती की, जैसे कॉलेज के दिनों में करते थे। शादी के बाद रीमा मेरे घर भी आई फिर वापस अमेरिका चली गई लेकिन रोज़ फोन करके मेरा हाल पूछती है। मुझे अपनी पुरानी दोस्त वापस मिल गई, इसका मैं भगवान को धन्यवाद देती हूँ। आज मुझे सुकून मिल रहा है जैसे कोई बोझ उतर गया है।

(vi) **(a)** 'परिश्रमी मनुष्य कभी ईश्वर की कृपा से वंचित नहीं रह सकता।' यह कथन सर्वथा उचित है क्योंकि मनुष्य के जीवन में परिश्रम का अधिक महत्त्व है। मनुष्य परिश्रम के द्वारा अपनी सभी समस्याओं को आसानी से दूर कर देता है। यह मानव जीवन का वह हथियार है जिसके बल पर वह भारी-से-भारी संकटों पर सफ़लता हासिल कर सकता है। परिश्रमी व्यक्ति से दु:ख सदैव दूर रहता है, इसलिए परिश्रम ही सफ़लता की कुंजी है। जो लोग केवल अपने भाग्य पर निर्भर रहते हैं वे कभी परिश्रम को अपने जीवन में महत्त्व नहीं देते।

मेरे पड़ोस में एक लड़की रहती थी। वह अत्यन्त ही बुद्धिमति थी। एक दिन उसका ऐक्सीडेन्ट हो जाता है, उसमें उसके दोनों पैर बुरी तरह चोटिल हो जाते हैं। डॉक्टर ने भी जवाब दे दिया था कि वह कभी नहीं चल सकती। वह एक दम निराश हो गई। लेकिन बहुत दिन वह व्हील चेयर पर रही। उसको अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता था तब उसने निश्चय किया कि वह भी एक दिन अपने पैरों पर चलेगी। उसने पैरों की थैरेपी चालू करवाई। धीरे-धीरे खड़ा होना चालू किया, फिर सहयोग के साथ चलना भी शुरू किया और अन्त में उसे सफ़लता भी प्राप्त हुई। अब वह चल सकती है और दौड़ भी सकती है। नित्य वह अपने स्कूल पढ़ने के लिए जाती है। इसलिए हमें भी कुछ पाने के लिए परिश्रम करना चाहिए।

(b) मुझे पढ़ने के लिए माँ ने मौसी के घर दिल्ली भेज दिया था। शुरू-शुरू में घर छोड़कर जाना मुझे अच्छा नहीं लगा। मुझे अपने घर की बहुत याद आती थी लेकिन फिर भी मौसी ने माँ की कमी मुझे वहाँ होने न दी। मैं वहाँ रहकर आई ए.एस. की तैयारी कर रही थी तो मौसी सुबह जल्दी उठकर मेरा टिफिन तैयार कर देती थीं जिससे मैं दिन में भूखी न रहूँ क्योंकि पूरा दिन मैं कोचिंग में रहती थी। शाम को जब मैं मौसी के घर आती तो वह मेरे लिए तुरन्त चाय बनाकर लाती थी जिससे मेरी दिन भर की थकान दूर हो जाए। कुछ समय आराम करने के बाद रात में वह मेरी पढ़ने में भी मदद करती थी, क्योंकि उनकी जी.एस. बहुत अच्छी थी। दो वर्ष मैंने वहाँ रहकर तैयारी की और दो वर्ष बाद मैंने परीक्षा उत्तीर्ण की। मुझे आई.पी. एस. का पद प्राप्त हुआ। यह मेरे परिवार की मेहनत और मौसी के सहयोग से ही प्राप्त हो सका। अपने पारिवारिक सदस्यों विशेषकर मौसी और उनका यह एहसान मैं जीवन भर न भुला सकी।

2. (i) लेखक मेट्रो रेल में सफ़र कर रहे थे। एक छोटी-सी बच्ची ने अपनी चुलबुली हरकतों से रेल के उस पूरे डिब्बे को खुशनुमा कर दिया था। कभी वह अपने परिवार के लोगों के कहने पर तोतली ज़ुबान में कोई फ़िल्मी गीत से रेल के उस पूरे डिब्बे को खुशनुमा बना दिया था।

(ii) लेखक को एक व्यक्ति को देखकर आश्चर्य हुआ जो उदास था। उसे देखकर ऐसा लग रहा था कि शायद कोई परेशानी रही हो, जो उन्हें इस मुस्कान से दूर रखे हुए भी या फिर हो सकता है कि उसका स्वभाव ही ऐसा हो।

(iii) जैसे-जैस हमारी उम्र बढ़ती जाती है, यह संवेदनशीलता हम सब में कम होती जाती है। कारण कई हो सकते हैं- पारिवारिक, सामाजिक, मानसिक या आर्थिक। बहुत हद तक हमारा कामकाज का क्षेत्र या व्यवस्था भी इसके लिए उत्तरदायी होता है। आज की कठोर दुनिया की कड़वी सच्चाइयों को बटोरते हुए और दिन-रात उसी में माथा खपाते हुए लोग धीरे-धीरे सम्वेदनशीलता से दूर होते चले जाते हैं।

(iv) (a) उत्तर-विकल्प (1) सही है।

व्याख्या: जहाँ मनोरंजन और कला के क्षेत्र से जुड़े लोग अपनी संवेदनशीलता को बचाए रख पाने में सक्षम होते हैं, वहीं आज की कठोर दुनिया की कड़वी सच्चाइयों को बटोरते हुए और दिन-रात उसी में माथा खापते हुए लोग धीरे-धीरे संवेदनशीलता से दूर होते चले जाते हैं अर्थात् हम अपने बचपन को भूल जाते हैं। एक छोटा बच्चा बहुत कोमल होता है तन और मन दोनों से वह इतना सन्वेदनशील होता है कि प्रेम, भय को आसानी से अनुभव कर सकता है लेकिन व्यवस्था ने हमें कठोर दुनिया में लाकर खड़ा कर दिया है।

(b) उत्तर-विकल्प (3) सही है।

(c) उत्तर-विकल्प (3) सही है।

(v) (a) उत्तर-विकल्प (3) सही है।

(b) उत्तर-विकल्प (3) सही है।

(c) उत्तर-विकल्प (1) सही है।

3 (A) (i) आज़ादी के अमृत महोत्सव में अनेक राज्यों ने भाग लिया।

(ii) अब तुम जले पर <u>नमक</u> मत छिड़को।

(iii) उत्तर-विकल्प (a) सही है।

(iv) उत्तर-विकल्प (d) सही है।

(v) उत्तर-विकल्प (c) सही है।

(B) (i) दसवीं की परीक्षा उत्तीर्ण करके तो मैं <u>बाग-बाग</u> हो गया।

(ii) दिन दूनी रात <u>चौगुनी</u> तरक्की करना।

(iii) उत्तर-विकल्प (b) सही है।

(iv) उत्तर-विकल्प (a) सही है।

(v) उत्तर-विकल्प (b) सही है।

SECTION - B

गद्य संकलन

4. (i) उक्त पंक्तियाँ मजबूरी पाठ से सम्बन्धित हैं और इसकी लेखिका मन्नू भंडारी हैं।

(ii) अम्मा इस समय शिब्बू से बात कर रही हैं तथा वे परसाद इसलिए चढ़ाना चाहती हैं क्योंकि शिब्बू ने बताया कि उनकी बहू ने बेटू को हिला लिया है। वहाँ बहुत बच्चे हैं जिनसे बेटू की दोस्ती हो गई है जिसके कारण अब वह अम्मा को याद नहीं करता।

(iii) 'इस बार भगवान ने मेरी सुन ली'– इस बार बेटू का मन अपनी माँ के घर में लग गया क्योंकि वहाँ आस-पास बहुत सारे बच्चे हैं जिनके साथ वह खेलता है और अम्मा को भी याद नहीं करता लेकिन पिछली बार नहीं हो पाया था क्योंकि वह अम्मा को याद करता था।

(iv) इस कहानी में अम्मा और उनकी बहू रमा के माध्यम से मन्नू जी ने दो पीढ़ियों के मध्य अन्तर को अत्यन्त मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। रमा के बेटे को अम्मा अत्यन्त प्रेम करती है। रमा कुछ समय के लिए बेटू को अम्मा के पास छोड़ जाती है। जब वह बम्बई से एक वर्ष बाद वापस आती है तब उसे बेटू के व्यवहार से निराशा होती है। क्योंकि जिस बेटू की वह छोड़कर गई थी वह पूरी तरह गाँव के माहौल में रम गया था। यह बात रमा को बिल्कुल अच्छी नहीं लगती। रमा अम्मा से कहती है कि उन्होंने बेटू को बिगाड़कर धूर्त कर दिया है। जो बात अम्मा के लिए सामान्य थी वह रमा के लिए असामान्य थी। रमा के छोटे बेटे को अंग्रेज़ी की कुछ कविताएँ याद थीं लेकिन अम्मा के पास रहे बेटू को नहीं, जिस कारण वह बेटू को अपने पास वापस ले गई। आर्थिक मजबूरियाँ व्यक्ति को अपने परिवार से दूर कर देती हैं, जिसके कारण व्यक्ति के भीतर से संवेदनशीलता समाप्त हो जाती है।

5. 'पुत्र-प्रेम' कहानी में लेखक ने चैतन्यदास के माध्यम से एक ऐसे पिता का चित्रण किया है, जिन्होंने अपने पुत्र प्रेम की तुलना में अर्थ-प्रेम को अधिक महत्त्व दिया। इस कथन से हम सहमत हैं क्योंकि पहले चैतन्यदास अपने पुत्र प्रभुदास से बहुत प्रेम करते थे क्योंकि उन्हें उससे बड़ी उम्मीद थी लेकिन जैसे ही उनके मन में इस शंका का जन्म होता है कि जब इस रोग का परिणाम विदित है तो फिर वह धन अपव्यय क्यों करें? उनके मन में स्वार्थ ने जगह बना ली थी। चैतन्यदास का एक कथन है कि एक संदिग्ध फल के लिए तीन हज़ार रुपए का खर्च उठाना बुद्धिमता नहीं है। मणिकर्णिका घाट पर युवक की बात सुनकर वह आत्म-ग्लानि से भर जाते हैं कि तीन हज़ार रूपए के लालच में पुत्र को खो दिया। शायद वह तीन हज़ार रूपए खर्च कर देते तो आज उनका पुत्र ज़िन्दा होता । हमें धन का लालच नहीं करना चाहिए।

6. दास प्रथा के कारण अनेक महिलाओं का शोषण किया जाता था लेकिन फिर भी उनके भीतर देशभक्ति की भावना विद्यमान थी। 'दासी' कहानी ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में लिखी गई है। यह मानव हृदय के द्वन्द्व और सम्वेदनाओं को प्रभावी ढ़ंग से उज़ागर करती है। इरावती जहाँ अपने दासी जीवन का निर्वाह भली-भाँति करती है, वहीं फिरोज़ा अहमद की समाधि के पास झाड़ू देती है, फूल चढ़ाती है। वह उस समाधि की दासी बनी रहती है। इरावती एक हिन्दू कन्या है, जिसे मुल्तान की लड़ाई में पकड़ा गया और दासी बना दिया गया। बाद में काशी के एक महाजन ने उसे कड़ी शर्तों पर ख़रीदा। दूसरी दासी फ़िरोज़ा है। फ़िरोज़ा को छुड़ाने के लिए अहमद ने एक हज़ार सोने के सिक्के दिए। बलराज इरावती से प्रेम करता है लेकिन ग़रीब होने के कारण विवाह नहीं कर पाता। वशीदास प्रथा के कारण महिलाओं का शोषण किया गया। लेकिन अनेक प्रकार के अत्याचारों व शोषण करने पर भी स्त्री में एकनिष्ठता, निर्भीकता व देशभक्ति की भावना बनी रहती है। इरावती और फिरोज़ा दोनों ही दासी है और इस कहानी के केन्द्र भी। इस कारण 'दासी' शीर्षक सार्थक है।

काव्य मंजरी (Kavya Manjari)

7. **(i)** कवि ने उक्त पंक्तियों में 'पतित पावन' शब्द का प्रयोग प्रभु श्रीराम के लिए किया है। वे एकमात्र ऐसे देव हैं जो नीच, अपवित्र, अधम व्यक्तियों का उद्धार करते हैं, इसलिए प्रिय हैं।

(ii) पषान अर्थात् श्राप से पत्थर बनकर पड़ी हुई गौतम पत्नी अहिल्या और मृग अर्थात् मारीच के लिए इन शब्दों का प्रयोग किया है। मृग रावण का सम्बन्धी था जो रावण की सहायता के लिए मृग बना था जिसका उद्धार राम ने किया और अहिल्या गौतम की पत्नी थीं। राम जी ने अपने चरणों की धूल के प्रताप से उनका भी उद्धार किया।

(iii) देवता, दैत्य, मुनि, सर्प, मनुष्य सभी माया के वशीभूत हैं। इनके हाथों में अपना हाथ डालकर तुलसीदास अपने अस्तित्व को नष्ट नहीं करना चाहते इसलिए हे नाथ! तुलसीदास को अपनी शरण में ले लें।

(iv) तुलसीदास भक्तिकाल की सगुण भक्तिधारा के कवि हैं। इन्होंने अपने सभी काव्य-ग्रन्थों में राम के प्रति अनन्य भक्ति भावना को प्रकट किया है। यह राम के प्रति एकनिष्ठ भक्त हैं, इसका उदाहरण इनके ग्रन्थ 'रामचरितमानस' मे मिलता है। राम की भक्ति ही उनका एकमात्र ध्येय है। तुलसीदास श्री राम को महान् और स्वयं को तुच्छ मानते हैं इसलिए कहते हैं-

"राम सो बड़ो है कौन मौसो कौन छोटो।"

तुलसीदास के राम सृष्टि के कर्त्ता-धर्त्ता और संहारकर्त्ता हैं। वह झील और शक्ति के समन्वित रूप हैं।

8. 'आ धरती कितना देती है' कविता में कवि अपने बचपन की एक घटना को याद करता है कि जब उसने धरती में पैसे बोए थे तब सोचा कि पैसों के पेड़ उगेंगे। लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। कालांतर में उसने सेम के बीज धरती में दबा दिए जिसके परिणामस्वरूप सेम की बेल लगी और बेल पर बहुत फलियाँ लगीं। विजय पताकाएँ सेम के नन्हें-नन्हें पौधे हैं। कवि को लगता है कि सेम की अंकुरित पंक्ति वास्तव में विजय के ध्वज हैं। उनकी बेलों में बहुत-सी फलियाँ लगेंगी।यह धरती रत्न प्रसविनी है अर्थात् जैसा बोएँगे वैसा ही प्राप्त करेंगे।

9. कवि हरिवंशराय बच्चन जी ने अंधेरे का दीपक कविता में मनुष्य को आशावादी बने रहने की प्रेरणा दी है। कवि का मानना है कि मानव जीवन में सदा सुख-दु:ख बने रहते हैं लेकिन कभी भी किसी दु:ख से घबराना नहीं चाहिए और न ही हार माननी चाहिए। प्रकृति हमें आशावाद का सन्देश देती है। कवि की निर्मल हँसी को देखकर भी बादल शरमा जाते थे अर्थात् जीवन में दु:ख के बादल कभी नहीं छाए लेकिन उनकी पत्नी के देहान्त के साथ कवि की सारी खुशियाँ चली गईं। लेकिन फिर भी दु:ख के क्षणों में यदि मुस्कुराया जाए तो दु:ख झेलना आसान हो जाता है।

सारा आकाश

(Saara Akash)

10. **(i)** उक्त कथन का वक्ता समर है और श्रोता प्रभा है।

(ii) उक्त कथन पर परिवार के सदस्यों की सामान्य प्रतिक्रिया थी। वक्ता की माँ ने उसके कथन पर कहा कि बेटा यह चख-चख तो रोज़ ही चलती रहती है।

(iii) 'दिन-रात की चख-चख' प्रभा की जेठानी के कारण हो रही थी क्योंकि वह प्रभा को पसन्द नहीं करती थी इसलिए वह कभी सास के कान भरती तो कभी समर के कान भरती थी। प्रभा के विरूद्ध समर को उत्तेजित करना भाभी की दिनचर्या बन गई थी।

(iv) 'संयुक्त परिवार में' रहकर कोई अपने व्यक्तित्व का विकास नहीं कर पाता है।' मैं इस कथन से सहमत हूँ। प्रभा सुन्दर, शिक्षित और व्यवहार कुशल स्त्री है लेकिन संयुक्त परिवार में रहने के कारण उसके स्वयं का व्यक्तित्व ही समाप्त होने लगता है। प्रभा पाक कला में निपुण थी लेकिन भाभी खाने में अतिरिक्त नमक डाल देती है जिसके कारण समर थाली को पैर से ठोकर मारता है फिर भी प्रभा सब कुछ बर्दाश्त करती है। प्रभा के परदा न करने से परिवार में उसकी आलोचना हुई। उसे निर्लज्ज़ कहकर उस पर ताने कसे गए। यहाँ तक कि उसके चरित्र पर भी उँगली उठाई गई। परदा करना कोई चरित्र का प्रमाण-पत्र नहीं है बल्कि बड़े के प्रति सम्मान भाव होना आवश्यक है।

11. "प्रभा के प्रति मेरे मन में प्यार, उसकी मज़बूरियों और तकलीफ़ों के प्रति दया है, या सिर्फ अपने किए पर पछतावा है।" 'सारा आकाश' उपन्यास में समर एक अहंवादी पति के रूप में चित्रित हुआ है। उसमें अनुभव की बहुत कमी है वह सम्बन्धों में ताल-मेल बैठा नहीं पाता है। वह भाभी के बहकावे में आसानी से आ जाता है। पत्नी प्रभा से दूर हो जाता है। वह अपनी पढ़ाई को जारी रखना चाहता था लेकिन इसी बीच उसका विवाह प्रभा से हो जाता है। प्रभा की प्रेमनिष्ठा को देखते हुए समर का हृदय परिवर्तित होने लगा और अपने किए पर उसे पछतावा भी हुआ। एक बार उसने प्रभा के गाल पर चाँटा मार दिया था। लेकिन कमरे में आते ही समर का मन आत्मग्लानि से भर गया। वह जानता था जो उसने किया है ग़लत किया है। फिर भी प्रभा का प्रेम समर के प्रति कम नहीं हुआ। वह दिन-रात उसकी सेवा करती है। जब उसे बुखार आया तो रातभर जगकर उसके माथे पर कुछ मलती रही जिससे वह ठीक हो जाए। अन्त में समर अपनी पत्नी के लिए घर छोड़ देने तक का निश्चय कर लेता है।

12. प्रभा की चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

(1) **सर्वाधिक सशक्त पात्र**- कॉलेज की सबसे शैतान लड़की प्रभा की ज़िन्दगी विवाह के बाद पूरी तरह बदल जाती है। उसको पति का और सारे घर वालों का अपमान जिठानी के षड्यन्त्र के कारण झेलना पड़ता है फिर भी वह अपने ससुराल को छोड़कर नहीं जाना चाहती।

(2) **सहनशील नारी** - पति द्वारा कई बार उसे मारा गया फिर भी प्रभा चुपचाप सहन करती रही। सास भी खरी-खोटी सुनाती थी। भाभी का षड्यन्त्र भी उसकी पाक कला पर पानी फेर देता है। वह सुबह से उठकर रात तक काम करती है।

(3) **समझदार और साहसी** - वह इसलिए अपने पति की बेरुखी बर्दाश्त करती है, क्योंकि वह जानती है कि समर स्वभाव या आदत का बुरा नहीं है। इसलिए उसने कभी अपने ससुराल वालों की बुराई मायके जाकर नहीं की। वह कभी समर से झगड़ती भी नहीं थी।

(4) **दूरदर्शी** - प्रभा के चरित्र की एक विशेषता यह भी है कि वह दूरदर्शी है। वह वर्तमान में ही न सिमटी रहकर आगे भविष्य की बात सोचती है। वह समर को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करती है।

'अषाढ़ का एक दिन'
(Aashad Ka Ek Din)

13. (i) उक्त कथन में वक्ता विलोम है और श्रोता कालिदास और मल्लिका है।

(ii) जब विलोम का प्रवेश होता है तब उसकी बातों से पता चलता है कि वह मल्लिका से प्रेम करता है लेकिन मल्लिका के जीवन में विलोम के लिए कोई स्थान नही है। कालिदास के सम्मान से वह थोड़ा दु:खी दिखाई देता है जिसकी अभिव्यक्ति वह व्यंग्यपूर्ण कटाक्षों से करता है। कालिदास को वह अपना प्रतिद्वंद्वी समझता है।

(iii) 'अतिथि की इच्छा का मान होना चाहिए' क्योंकि भारतीय परम्परा के अनुरूप अतिथि को भगवान स्वरूप माना जाता है लेकिन विलोम को वह सम्मान प्राप्त नहीं हुआ।

(iv) 'वक्ता दूरदर्शी और वाचाल है।' वह नाटक में कालिदास के विपरीत बनकर उभरा है। वह जानता है कि मल्लिका की माँ उसकी बात मान लेंगी, इसलिए वह उनके कान भरता है- "मल्लिका बहुत भोली है। वह लोक और जीवन के सम्बन्ध में कुछ नहीं जानती। वह नहीं चाहती कि मैं इस घर में आऊँ, क्योंकि कालिदास नहीं चाहता।'' वह अपनी वाचालता का उदाहरण इस प्रकार देता है कि "तुम चाहते हो इस समय मैं यहाँ से चला जाऊँ। मैं चला जाता हूँ। इसलिए नहीं कि तुम आदेश देते हो..... ।"

14. अम्बिका के चरित्र की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

(1) **ममत्व से परिपूर्ण** - मल्लिका की जीवन दृष्टि से असहमत होते हुए भी उसका ममत्व छिप नहीं पाता। उसकी अभिव्यक्ति भी दिखाई नहीं देती। वह सामान्य माताओं की तरह अपनी पुत्री का विवाह कर देना चाहती है।

(2) **आत्म अभिमानी** - वह अपनी पुत्री का घर बसता हुआ देखना चाहती है लेकिन अपमान का मूल्य देकर नहीं। वह प्रियंगुमंजरी के दर्प-भरे व्यवहार से आहत होती हैं और निडर होकर उसकी ही भाषा में उत्तर देती है।

(3) **मानव** - स्वभाव की ज्ञाता - अम्बिका मानव- स्वभाव को अच्छी तरह जान लेती थी। वह कालिदास के आत्मलीनता के स्वभाव से परिचित थी। इसलिए वह मल्लिका और कालिदास के सम्बन्ध के पक्ष में न थी। आत्मलीन व्यक्ति आत्मकेन्द्रित और स्वार्थी होता है।

15. इस नाटक में आधुनिक समस्याओं को नाटककार ने प्रस्तुत किया है। डॉ. अवस्थी ने इसकी भूमिका में लिखा है कि ''आषाढ़ का एक दिन में एक ऐसे कथानक का पुनराख्यान है जिससे सांसारिक सुखों और आध्यात्मिक शान्ति के पास्परिक विरोध तथा उनके बीच खड़े हुए व्यक्ति के द्वारा निर्णय लेने का अनिवार्य द्वंद्व निहित है।'' कालिदास कश्मीर जाने के मार्ग में मल्लिका के गाँव से गुज़रता है पर उससे मिलता नहीं है। इससे पहले जब वह गाँव गया या तब मल्लिका से भावना के स्तर पर जुड़ा था लेकिन भौतिक स्तर पर वह मल्लिका से बहुत दूर चला जाता है। वह उज्जयिनी में राजनीतिक कार्यों में उलझ जाता है।

वर्तमान में भी गाँव में प्रेम विवाह को अच्छी नज़र से नहीं देखा जाता क्योंकि प्रेम विवाह सफ़ल नहीं हो पाते। आज अनेक शादियाँ टूट रही हैं। कालिदास कहता है कि "अधिकार मिला, सम्मान मिला, जो कुछ मैंने लिखा उसकी प्रतिलिपियाँ देश भर में पहुँच गईं परन्तु मैं सुखी नहीं हुआ।..... एक राज्याधिकारी का कार्यक्षेत्र मेरे कार्यक्षेत्र से भिन्न था।" इस नाटक में आधुनिक नर-नारी के सम्बन्धों की भी समस्या को उजागर किया गया है।

■■